om 23 Final_Page 1 and 2 02/03/2015 10:20 Page 2

आनंद में रहने के उपाय

ज्ञान और अज्ञान दोनों से मुक्ति का नाम ''आनंद''

एक संत का आशीर्वाद लेने कई लोग आये हैं। संत एक के बाद एक को बुलाते हैं और पूछते हैं कि आपको क्या चाहिए?

सबसे पहले एक वृद्ध को बुलवाकर पूछते हैं, 'आपको क्या चाहिए?'

- ब्र. कु. गंगाधर

'मन में चैन नहीं है, मुझे आनंद चाहिए' वृद्ध ने जवाब दिया।

एक महिला से पूछने पर वो कहती है 'मुझे आनंद की तलाश है'।

युवक की भी ऐसी ही आवाज़ है: 'भटक-भटक कर थक गया परंतु आनंद नहीं मिलता। व्यापारी ने भी कहा कि : घर के लोगों की खातिर काला-धंधा करता हूँ...लेकिन घर के लोगों को मेरी कदर नहीं है। मेरी स्थिति और वाल्मिकी लूटेरे की स्थिति में कोई अंतर नहीं है। मैं आनंद चाहता हूँ। बहुत आनंद, जिससे मैं अंदर से संतुष्ट हो जाऊँ।'

ऐसे में एक प्रेरक प्रसंग का स्मरण होता है। वर्षा ऋतु की एक अंधकार भरी रात्रि। आकाश में बादल हैं। बीच-बीच में बिजली की चमकार और आवाज़! एक युवक भटक गया है। बिजली की चमक के प्रकाश में रास्ता ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक फकीर की झोपड़ी में जाता है। उस वयोवृद्ध ने अपनी पूरी ज़िन्दगी उस झोपड़ी में ही बिता दी थी, कभी वह झोपड़ी से बाहर नहीं निकला था। युवक ने फकीर से पूछा कि आपने बिल्कुल संसार को नहीं देखा है क्या?

वृद्ध फकीर ने तुरंत जवाब दिया : 'देखा है ना! मैंने संसार को खूब अच्छी तरह से देखा है। क्या आपके अंदर में ही तो संसार नहीं है!'

वो युवक झोपड़ी के पास जाकर घबराते हुए झोपड़ी के द्वार को खटखटाता है। अंदर से आवाज़ आती है : कौन है? क्या खोज रहे हो?

'उस युवक ने कहा, 'यही तो मुझे पता नहीं कि मैं कौन हूँ', वर्षों

अपने अहंकार को पुष्ट करने वाली हरेक वस्तु आपको आनंद के उद्गम का स्रोत लगती हैं। लेकिन इसमें वर्तमान में या भविष्य में विक्षेप या अंतराल खड़ा होने पर आप अंदर से दु:खी हो होते हैं। अपेक्षाओं की तुष्टि-संतुष्टि को ही आनंद मान लेते हैं।

से आनंद की खोज में भटकता रहता हूँ। आनंद को खोज रहा हूँ और उसे खोजने की जिज्ञासा ही आपकी कुटिया के द्वार पर ले आई है।

कुटिया के अंदर से हंसने की आवाज़ सुनाई दी और यह भी आवाज़ आई : 'जो खुद की जात (अर्थात् स्वयं) को नहीं पहचानता उसे आनंद कैसे प्राप्त हो सकता है! इस खोज में दिये तले अंधेरा नहीं रह सकता। परंतु ये जानना भी बहुत जानने जैसा है कि मैं मेरी जात (स्वयं) को नहीं जानता हूँ।

इसीलिए ही मैं अपनी कुटिया का द्वार खोलता हूँ। और याद रहे कि यदि हम दूसरे का दरवाज़ा खोलते हैं तो हकीकत में कोई दरवाज़ा खुलता नहीं है।'

और झोपड़ी का द्वार खुला, बिजली के प्रकाश में उस युवक ने देखा कि उसके सामने वृद्ध फकीर खड़ा है। वे अद्भुत सौन्दर्यवान हैं, वे दिगम्बर (नग्न) हैं। युवक उस फकीर के चरणों में बैठ जाता है, और उसके चरणों को नमन करते हुए पूछता है: 'आनंद क्या है? आनंद कहाँ है?'

युवक की बात सुन वृद्ध फकीर हंसने लगा! 'मेरे प्रिय युवक, आनंद तो अशरण यानि कि किसी की शरण नहीं स्वीकार करने में है। ऐसा शरण छोड़ देने से आनंद का पुर छूटने लगता है। इसलिए तू मेरी शरण छोड़ दे! सबके चरण छोड़ दे। आनंद के लिए किसी की ये शरणागति खोजना है यही तेरी भूल है। आनंद तेरे हाथ की बात है। कहिए, आपको क्या चाहिए!?

फकीर की बात सुन युवक संकोच में पड़ गया और फिर उसने

बुद्धि शुद्ध, मन शान्त यही अन्तिम स्थिति

सबका चेहरा मुस्कराता हुआ है ना! हमारी इस मुस्कराहट में अंदर से यही गीत निकलता शुक्रिया बाबा आपका, कितने हम भाग्यवान हैं जो सारे संसार में हमारे जैसा कोई मुस्कराने वाला नहीं है। सदा मुस्कराने की रिहल्सल करो तो स्वप्न में भी मुस्कराते रहेंगे, इसके लिए न इधर देखो, न उधर देखो। दुनिया वालों को ऐसे मुस्कराना सहज नहीं है।

किसी भी कारण से किसी के लिए अगर द्वेष भाव आया तो जायेगा नहीं, इतना खतरनाक है। सदा ही बाबा को सामने देखो, साथ में देखो तो पूरा सच्चा योगी, रीयल योगी, सहज योगी बन जाते हैं। बाबा को साथ में देख कर्मयोगी बन जाते हैं। अंदर ही अंदर स्थिर बुद्धि जब तक नहीं है तो अडोल अचल नहीं रहेंगे माना डोलायमान और चलायमानी है, यह दो बातें परीक्षा के रूप में आती हैं। इसमें मूँझने, घबराने की बात नहीं है। कैसे करें, क्या करें के बजाए बाबा कहता है यह करो ऐसे करो, बस, तो योग लगाना इज़ी हो जाता है। फिर नैचुरल योगी बन जाते हैं। नैचुरल योगी का सर्व सम्बन्ध एक बाबा के साथ माता-पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरु... की शक्ति से निर्भय है, निर्वैर है। ऐसी ऐसी बातों का अभ्यास करने से नैचुरल योगी...। फिर कोई नहीं कहेगा इसकी नेचर थोड़ी ऐसी है क्योंकि नैचुरल योगी का जिसके साथ योग है उन जैसी नेचर हो जाती है। जिसके साथ सम्बन्ध होगा, जिसके संग में रहेगा उसका रंग लग जायेगा।

बी होली बी राजयोगी, होली फर्स्ट, पवित्रता से जो योगी है उसमें अपवित्रता का अंश भी नहीं है। थोड़ी भी अपवित्रता बड़ी दुश्मन है, थोड़ा भी व्यर्थ ख्याल शुद्ध आत्मा बनने नहीं देगा। पुरुषार्थ में मैं शुद्ध आत्मा हूँ, मन शान्त तभी होता है जब बुद्धि स्थिर है। किसी ने मुझसे पूछा कि स्मृति क्या होती है? अन्तिम घड़ी की स्मृति में एक बाबा और कुछ न हो उसके लिए क्या पुरुषार्थ है? मन शान्त बुद्धि शुद्ध, कोई भी हलचल न हो। मानो हलचल हो रही है पर हमारी अचल अडोल स्थिति हलचल को बंद कर देती है। महाविनाश के पहले ऐसी-ऐसी बातें होंगी, दृश्य होंगे लेकिन हमें डरना नहीं है। जो बहुतकाल से निडर स्थिति में रहे हैं उनको सामना करने में डर नहीं लगेगा।

शिवबाबा ऐसी फीलिंग देता है जो सबको बाबा की याद आ जाये, इतना खींचता है, बैठा है वहाँ। बाबा के कमरे में जाओ तो ऐसा लगता जैसे बाबा मेरे को देख रहा है। वही खटिया, वही गद्दी उसमें जो सुख पाया है, वो सारा स्मृति में आ गया। अगर इसके अलावा कोई भी बात याद आई, तो बाबा की याद नहीं आयेगी फिर बाबा मुझे याद नहीं करेगा। अगर सूक्ष्म में मैं कोई बात याद करुँगी तो बाबा याद नहीं आयेगा। अगर बाबा मुझे याद नहीं आयेगा तो बाबा मुझे क्यों याद करेगा? एक याद अक्षर की गहराई में जाओ, बाबा बड़ा अच्छा है। करनहार करता ऐसा है, जो कराने में बड़ा होशियार है। एक बाबा को करावनहार के रूप में याद करो। करनहार फिर करावनहार। हम नहीं कह सकते, करावनहार करा रहा है, ऐसा मेरा बाबा है। धन से सेवा कराने की भी अक्ल चाहिए, ऐसे ही तुमने किसको कहा कि तुम ये करो, तो वो नहीं मानेगा। यज्ञ के सारे भण्डारे कैसे चलते हैं? मिल करके करते हैं। यह नियम कहो या वरदान कहो, कहाँ पर भी रहते पहले यज्ञ सेवा किया, कराया है, मेरे पास धन हैं नहीं, पर किसका सफल कैसे कराया जाये, यह भी अक्ल चाहिए। सफल करना और कराना, उसके लिए पहले अपना समय सफल करो। मन-वाणी-कर्म श्रेष्ठ है तो सफल है, तो भण्डारे की भण्डारी भरपूर रहेगी।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

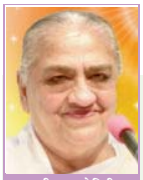

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

पुकार में नहीं गंवाओ, अमृतवेला लेने का समय

आज आप सेवा कर रहे हो और कल राज्य करेंगे। आपके भविष्य का सीन नयनों में घूम रहा है। वैसे तो हमने अनेक बार राज्य किया है, अभी तो सिर्फ रिपीट करना है। आप सभी पवित्र आत्माएं हो। पवित्रता का ही पूजन होता है। पवित्रता ही जीवन की शोभा है। आप सभी सेवाधारी टीचर्स को बाबा आज लाख-लाख बधाइयाँ दे रहे हैं और खुश हो रहे हैं अपने सेवाधारी साथियों को देख। देखो, बाबा का जन्म भी सेवा के लिए होता है। आज बाबा साकार में तो नहीं हैं लेकिन एक-एक को सूक्ष्मवतन में इमर्ज कर बहुत प्यार कर रहे हैं। आपने अपनी जीवन सेवा के लिए बिताई है, बाबा आप शिव शक्तियों को सेवा की मुबारक दे रहे हैं। एक-एक टीचर्स को देख बाबा कैसे खुश होता है, बात मत पूछो। हमने साकार बाबा को देखा बच्चियों की सेवाओं का समाचार सुन बाबा बहुत खुश होते थे, कहते थे कमाल है फलानी बच्ची की। तो बाबा आपको सूक्ष्मवतन में इमर्ज करके वाह-वाह के गीत गा रहा है कि कुमारियों ने हिम्मत रखी। हम सबको दिल्ली को स्वर्ग बनाना है यह तो गैरन्टी है। स्वर्ग की स्थापना करने वाली कुमारियाँ, माता या भाइयों को बाबा आज सेवा की करोड़ों मुबारकें दे रहे हैं। टीचर्स को सिर्फ वाणी की सेवा ही नहीं करनी है बल्कि अमृतवेले उठ भक्तों को सकाश देना है। आप तो बाबा से सीधा मिल लेते हैं लेकिन जो नहीं मिल पाते उन्हें प्राप्ति करानी है। भक्त भी कम नहीं, आज बाबा विशेष भक्तों को यादप्यार दे रहे हैं। टीचर्स को, सभी को दिल का सहारा देना है, चाहे ज्ञान में चलने वाले हों या भक्त दोनों। एक दूसरे को मुबारक देते अब विघ्नों को खत्म करो, मुबारक देना माना दुआयें देना। बाबा के प्यार का रिटर्न सेवा है, बाबा इस विश्व की ऐसी सेवा चाहते हैं जो पुरानी विश्व बदलकर नई हो जाये। संस्कार मिलाने के लिए जो ज्ञान योग और धारणा की क्लास होती है उस पर ध्यान दो। अमृतवेले सारी कमी कमज़ोरी बाबा को दे दो और उसे खत्म करने की बाबा से प्रॉमिस करो। बाबा अमृतवेले दृष्टि देता है, वही हमारे लिए दुआएं और प्यार है, उसे अमृतवेले स्वीकार करो। अमृतवेला नींद या व्यर्थ संकल्पों में न जाए। बाबा हमें दे रहा है और हम कुछ और सोच रहे हैं। बाबा से वरदान के समय वरदान लो और बातों के चिंतन में न जाओ। अमृतवेला लेने का समय है, पुकार में समय नहीं गंवाओ। कइयों को अमृतवेले अनुभव भी होता है कि बाबा दुआएं बांट रहा है, दुआयें लेना हमारा काम है। अमृतवेले जागृत अवस्था में वरदान लेंगे तो पुरुषार्थ सहज हो जायेगा। संस्कार मिटाने की कोशिश नहीं करनी पड़ेगी। टीचर्स अपने को और अपनी क्लास को नम्बरवन करेंगी तो ब्रह्माकुमारीज़ का नाम बाला होगा। टीचर्स अपनी-अपनी सेवा अच्छी कर रही हैं, सेन्टर्स अच्छे चल रहे हैं लेकिन क्लास को आगे बढ़ाओ। अंदर के तीव्र पुरुषार्थ का टीचर्स को ओना रखना है। जो भी है वह कायदेमुजीब करो, बार-बार पूछो नहीं। कायदे पर चलो ताकि कभी कोई रिपोर्ट न मिले।

निर्विघ्न रहने के लिए टीचर्स अपने पर अटेन्शन रखें। अमृतवेले उठकर अपनी चेकिंग करो कि मेरे में क्या कमी है, फिर उसी प्वाइन्ट पर सिमरण कर उसे समाप्त करो। कारण का निवारण करो और देखो मैं इस कमज़ोरी को खत्म करने में सफल रही? निमित्त पर सबका ध्यान जाता है। बाबा कहते ऐसा बनो जो राजधानी में पहले आओ, पहले तो मम्मा बाबा का राज्य होगा लेकिन उनके साथ हम भी आयेंगे। तो सदा इसी खुशी में रहना है और निर्विघ्न भी रहना है। जितना हो सके यहाँ ही सबको संतुष्ट करना है। हम देने वाले दाता हैं, दे तभी सकेंगे जब स्वयं अंदर से भरपूर होंगे। जितना हम खुश होंगे हमें देख सब खुश होंगे।